मंगला आरती श्री राधे गोविन्द जी की

राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द।
रटो राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द॥
राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे गोविन्द।
राधे गोविन्द भजो राधे गोविन्द॥

झाँकी सब करता प्रभु दर्शन सब करता,
दुःख हरता सुख करता जय श्री कंस पछाड़ संतन सुख करता।
मस्तक मुकुट बिराजे शोभा सिर भारी प्रभु शोभा सिर भारी॥
केशर तिलक मनोहर प्रभुजी के अधिकारी जै देव जै देव।
कानन कुण्डलअनूप बंशी गिरधारी, प्रभु अनूप बंशी गिरधारी॥
कंचन चोसर पहरे केशर गिरधारी, जै देव।
रत्न जड़ाव जड़े हीरा मुक्ता वनमाला प्रभु मुक्ता वनमाला॥
दोऊ प्रतीपाल सजे हो कछनी नन्द माला जै देव जै देव।
भुजबंधन भुत आरसी नथ हीरा जड़िया प्रभु नथ हीरा जड़िया।
सुन्दर श्याम मनोहर बंशी सूख धरिया जै देव जै देव।
अजामेल उद्धारण गज,गणिका तारी प्रभु गज गणिका तारी॥
दीनानाथ दया करो तेरी गति न्यारी, जै देव जै देव।
शीश सदा शिवचरणों में चित धरता प्रभु चरणों में सिर धरता।
इन्द्रादिक से हर्षित है नारद नृत्य करता, जै देव जै देव।
जो यह सरजू की आरती नितप्रति गासी प्रभु नित प्रति गासी॥
यह भव सागर पार उतरसी चित चरणों में धरस्या जै देव जै देव।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

जै श्री रघुनाथा प्रभु जय जानकी नाथा।
दोऊ कर जोड़े विनती प्रभु सुन मेरी दाता, जै देव जै देव॥
आप रघुनाथ हमारे प्राणपिता माता प्रभु प्राणपिता माता।
आप हो सजन सगाती भक्ति मुक्ति दाता, जै देव जै देव॥
चौरासी फंद छुड़ावो मेटो यम त्रासा, प्रभु मेटो यम त्रासा।
निशिदिन प्रभु मोय राखो अपने संग साथा, जै देव जै देव॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन संग चारों भैया, संग चारों भैया।
जगमग ज्योति बिराजे शोभा अति लै नीया जै देव जै देव॥
नारद वेणु बजावत नाचत वा थैया प्रभु नाचत था थैया।
सुवरण थाल आरती करत कौशल्या मैया, जै देव जै देव॥
दास कबीर कृपा कर बोले उपकारी, प्रभु बोले उपकारी॥
हे हरि हमें बतावो तोताराम धनुषकारी, जै देव जै देव॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव संतन सुख दाता, प्रभु भक्त सुख दाता।
जाने तिहारे दर्शनपायेश्रीरघुनाथा जै श्रीजानकी नाथा, प्रभु जै
शीशमुकुटमकराकृति कुण्डल धनुष बाण धारी प्रभु
मनीराम दर्शन को पल-पल बलिहारी प्रभु,
छिन छिन बलिहारी, जै देव जै देव॥

आरती श्री राधागोविन्द जी की

मैं अरज करूं श्री राधागोविन्द आप सुन लीजो।
थाँका चरण कमल की भक्ति सदा मोय दीजो ॥1॥
एजी प्रभु मैं अनाथ तुम नाथ कृपा मोपे कीजो।
अब मेरी गरीब की विनय कान धर लीजो ॥2॥
एजी प्रभु भवसागर में भयो जात महाराजा।
मैं वेद पुराण न सुनो जी जगत के राजा ॥3॥
एजी प्रभु मोह माया जंजाल जगत की फाँसी।
मैं फंसा जाता हूँ निकसा कैसे जासी ॥4॥
एजी प्रभु अजामैल से पतित उबारेन त्यारे।
जब सुआ पढ़ावत गणिका हरि ने त्यारी ॥5॥
एजी प्रभु प्रहलाद काज नृसिंह रूप हरि धारयो।
जब हिरण्यकश्यप को उदर नखन ते विदारयो ॥6॥
एजी प्रभु द्रुपदसुता की चीर बढ़ायो बहुभारी बढ़ायो बहुभारी।
जब दुष्ट दुशासन खैंचत खैंचत हारी ॥7॥
एजी प्रभु ब्रज पर कोप कियो इन्द्र ने भारी इन्द्र ने भारी।
जब बायां नख पर गोवर्धन गिरधारी ॥8॥

एजी प्रभु पापपुण्य का भार शीश पर भारी शीश भारी।
मेरा भार उतारो आपहि हो बनवारी ॥9॥
एजी प्रभु विप्रसुदामा की बीनती सुण लीजो।
म्हारी हुई दरिद्रता दूर भक्ति निज दीजो ॥10॥
एजी प्रभु मुझ गरीब की सुन सुन अन्तर्यामी।
अब मेरा बेड़ा पार लगावो मेरे स्वामी ॥11॥
एजी प्रभु भक्त वत्सल भगवान जगत के राजा विश्व के राजा।
म्हारी गौर 'सूर' की विनय सुन महाराजा ॥12॥

दोहा

मोर मुकुट कटि कांछनी, कर मुरली उर माल?
यह मानक मोहन सदा बिहारी लाल॥
क्या कहुँ छवि आपकी भले सजे हो नाथ।
तुलसी मस्तक जब नवै धनुष-बाण लो हाथ॥
धनुष बाण धारे रहो लेकर अपने हाथ।
भीर पड़ी हरि भक्त में सहाय करो रघुनाथ॥
राधे तू बड़भागिनी कौन तपस्या कीन।
तीन लोक तारन-तरन सो तेरे अधीन॥
उल्टे जल मछली चढ़े ब्रह्मो जात गजराज।
जो जाके शरणे पड़े बाँने वांकी लाज॥
आम झरे मोती पड़े दिखे नोसर हार।

चम्पावरनी राधिका निरखो नन्दकुमार॥
जल में बसे कुमौदनी चन्द्र बसे आकाश।
जो जाके शरणे बसे वांने वाँकी लाज॥
कित मुरली कित चन्द्रिका कित गोपियन को साथ।
अपने जन के कारणे कृष्ण भये रघुनाथ॥

कीर्तन

श्री राधेश्याम श्री राधेश्याम श्याम श्याम राधे राधे।
श्री राधे कृष्णा राधे कृष्णा कृष्णा कृष्णा राधे राधे॥
राधे गोविन्दा बोलो राधे गोविन्दा।
राधे गोविन्दा बोलो बाल मुकुन्दा॥
दीनन की नाथ दयाल रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
बन्शी बजावे नन्दलाल रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
गैया चरावे गोपाल रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
रास रचावे घनश्याम रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
भक्तन के प्रतिपाल रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
शरण आया की राखो लाजरे, भजो मन राधे गोविन्दा॥
गल बिच वैजन्तीमाला रे, भजो मन राधे गोविन्दा।
राधे गोविन्दा घनश्याम रे, भजो मन राधे गोविन्दा।

राधे गोविन्दा राधे गोविन्दा, भज राधे गोविन्दा ।।
श्री राधेश्याम राधेश्याम, श्याम श्याम राधे राधे ।
श्री राधे कृष्णा राधे कृष्णा कृष्णा कृष्णा राधे राधे ।
श्री राधेश्याम राधेश्याम, श्याम श्याम राधे राधे ।
श्री राधे कृष्णा राधे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा राधे ।।

श्रृंगार आरती श्रीराधे गोविन्द मदनमोहनजी की

आरती राधागोविन्द की, उतारूं गिरवरधारी की,
आरती मदनमुरारी की, उतारू राधा प्यारी ।
पाँय मैं नूपुर धुन बाजे साथ में पैजनियाँ बाजे,
चार पग तल इक न्यारी की, आरती गोविन्द बिहारी की,
आरती कृष्णा मुरारी की, उतारूं राधा प्यारी की ।
काछनी पीताम्बर काछे, कमर में करधनियाँ आछें,
नाभि तो अमृतवारी की, आरती मदनमुरारी की ।
ये तन जामा सुन्दर पहरया साथ में पटका भी लहरया,
कंठी कंठी लटकारी की, आरती गोविन्द बिहारी की ।
हृदयभूषण सुन्दर सोहे माल बैजन्ती गल सोहे,
कड़ा बाजुवदधारी की, आरती गोविन्द बिहारी की ।
मनोहर रूप प्रभु सोहे दरश कर भक्तन मन मोहे,

एक मुख मुरली प्यारी की, आरती गोविन्द बिहारी की ।
भृकुटी में भाल तिलक चमके ज्योति में दिव्य रूप दमके,
स्वर्णमय छत्तरी की, आरती मदन मुरारी की ।
शीश पर मोर मुकुट साजे कान में कुण्डल छवि न्यारी,
स्वर्ण में छत्तरधारी की, आरती कृष्ण मुरारी की ।
आरती करूं नाथ थांकी रहूं चरणों का अनुगामी,
शरण प्रभु हम हैं तिहारी की, आरती मदन मुरारी की ।
जाप पूजा न कछु जानू, रात दिन तुमको ही मानू,
कष्ट सब मेटनहारी की, आरती गोविन्द बिहारी की ।
आरती कृष्ण मुरारी की उतारूं राधे प्यारी की,
पलोटत पांय रहूँ तेरी-वाह गह लीजो प्रभु मेरी,
भक्ति चाहूं चरण तिहारी की, आरती मदन मुरारी की ।
विनती करूं नाथ थारी-सुनी तुम अब तो गिरधारी,
भक्त भय भन्जनहारी की, आरती मदनमुरारी की ।
आरती राधा गोविन्द की उतारूं गिरवरधारी की ।
प्रार्थना सुन मुरली वारे, खड़े प्रभु हम तेरे द्वारे,
मिटाओ मन की दुख भारी जी, आरती गोविन्द बिहारी की ।
गुणों को कहां तक मैं गाऊं अल्प बुद्धि न यथा चाऊ,
क्षमाकर चूक हमारी भी, आरती कृष्ण मुरारी की ।

आरती कृष्ण मुरारी की उतारूं राधा प्यारी की,
आरती प्रभु तेरी गाऊं, दया की दृष्टि तनिक चाहूँ।
पार कर नाव हमारी भी, आरती गोविन्द बिहारी की।
आरती ये जो सुन्दर गावे परम पद निश्चय वो पावे।

श्री गोविन्द स्तुति

श्री राधे गोविन्द गोपाल,
काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
माथे पर मुकुट बिराजत है, अंग पर पीताम्बर राजत है।
गल बिच बैजन्ती माला प्यारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
कानों में कुण्डल सोहत है, बाजूबंद मन को मोहत है।
कटि रत्न जटित करधनिया की छवि न्यारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
छवि ललित त्रिभंगी राजत है, पायन में नुपूर बाजत है।
चरणों की आशा अरूण कमलअवुहारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राध गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी।

मैं आया शरण तुम्हारी॥
कर कमलन मुरली सोह रही, मुस्कान मधुर मन मोह रही।
भक्त के जीवन प्राण और अति प्यारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
मन मोहन जग के हो राजा, इक बार तो मंदिर में आजा।
दर्शन देना कृपया हे कृष्ण मुरारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
मैं निशि दिन ध्यान लगाता हूँ, श्री गोविन्द तुम्हें बुलाता हूं।
आ जाओ मोहन लेकर गरूड़ सवारी मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
भोजन मैं स्वयं बनाता हूं और प्रेम से भोग लगाता हूं।
पा जाना प्रेम प्रसाद आप बनवारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी॥
जिस जिसने तुमको ध्याया है, उन्हें प्रगट हो दरश दिखाया है।
अब क्यों कर रखी देर हमारी बारी, मैं आया शरण तुम्हारी॥

श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी ।।
चरणों में शीश झुकाता हूं, और सविनय सुनाता हूं ।
कर देना भव से नैय्या पार हमारी, मैं आया शरण तुम्हारी ।।
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी ।।
गणिका तारी अहिल्या तारी और तारे तुमने बहु नर नारी ।
अब कहां छुपकर बैठे हो, हे गिरधर मैं आया शरण तुम्हारी ।।
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी ।।
यह कुन्ती दासी शरण तुम्हारी है, चरणों पर बलिहारी है ।
रख लेना मेरी लाज आप बनवारी, मैं आया शरण तुम्हारी ।।
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी ।।
इस देश पर संकट आया है, चहूं और से शत्रु छाया है ।
अब आकर रक्षा कीजे असुर संहारी, मैं आया शरण तुम्हारी ।।
श्री राधे गोविन्द गोपाल, काट भव जाल गोवर्धन धारी,
मैं आया शरण तुम्हारी ।।

ॐॐॐ

भजन

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये
मुख में हो राम नाम जन सेवा हाथ में
तू अकेला नाहिं प्यारे राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये
किया अभिमान तो, फिर मान नही पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्री रामजी को भायेगा ।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद राम नाम कहिये
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये
आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड दे
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे
साधु-संग राम-रंग अंग-अंग रंगिये
काम-रस त्याग-प्यारे राम-रस पीजिये
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये

समर्पित

आकाश में झिलमिलाते उन असंख्य असंख्य सितारों में, से एक नन्हें से प्यारे से उस सितारे को समर्पित जो शायद मेरे स्व. पुत्र अनुज के रूप में प्रकाशमान होकर हमें सान्त्वना दे रहा हो और जिन्दगी के शेष बचे हुए लम्हों को गुजारने में हमारी हिम्मत बढ़ा रहा हो।

रामस्वरूप मोर

मुद्रक : प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर फो. 2294887 मो. 9414057

(५)

रसिया श्री ग्वाल आरती का

यशोदा मैया खोल किवाड़िया, लालो आयो गऊ चराय।
आयो धेनु चराय सांवरो, आयो धेनु चराय ।।यशोदा ।।
गऊ गोप गोपालन गऊ, संग बंशी मधुर बजाय
सुन गोपीजन मन हर्षित भई चढ़ी अटारी जाय ।।यशोदा ।।
यशोदा मैया करे आरती फूली नाय समाय।
हंस हंस लेत बलैया मैया बार बार बलि जाय ।।यशोदा ।।
खिडक खोल गैया कर दीन्ही बछरा रहे चुखाय।
कारी कजर धोरी घूगर को रह्यो दूध दूहाय ।।यशोदा ।।
दूध दुहाय कहे मन मोहन माखन देली माय।
सद् लोही तोय छाछ मिलेगी। लाला पिओ दूध अपार ।।यशोदा ।।
इतने में एक सखी सांवरी टेरत पहुंची आय।
गोविन्द मोकू दूध न देवै गैया रही रेमाय ।। यशोदा ।।
सखी सांवरी कहने लगी ने गाय दुहाई न जाय।
आधो दूध दोहनी में डारे आधो रह्यो चड़ाय ।।यशोदा ।।
सखी सांवरी कहने लगी मधुर मन मुसकाय।
'सूर' श्याम यशोदा के लाला नित्य दुहावन जाय ।। यशोदा ।।

ॐॐॐ

संकीर्तन

जय राधे राधे गोविन्द बोल।
जय राधे राधा गोविन्द बोल ।।
नित गोर हरि बोल हरि बोल बोलो भाई।
नित गोर हरि हरि बोल,
नित केशव माधव गोविन्द बोल।
हरे प्रेम भक्ति नित बोल हरि बोल
हरे या कलयुग दुःख भागे बोल हरि हरि बोल
यही कलयुग में साजन भाजन बोल हरि हरि बोल
हरे आनन्द निपुर बोले हरि हरि बोल
नित केशव माधव गोविन्द बोल।

ॐॐॐ

संकीर्तन

जय राधे राधे ।। गोविन्द बोलो ।राधे गोविन्दा बोलो।
हरि बोल हरि बोल।। प्रेम से कहो श्री राधे।
कृष्णा बोले प्रभु निताई चैतन्य नाम संकीर्तन की जय।
राधा गोविन्द भगवान की जय, गुरू महाराज की जय।।
संध्या की जय, जय जय श्री राधे।
हरि हरा ये नमो कृष्ण यादवाय नमो

हरि यादवाय माधवाय कृष्ण यादवाय नमोः
राधा गोविन्द गोपीनाथ मदन मोहन
हरे कृष्ण चंदो नित्या नन्दो आखरी गोविन्दो
भजो हरि गुण भला रघुनाथ।
भजो चिरंजी गोपाल भक्त रघुनाथ,
भजो इकाई गुसाई चार भुजी नाथ
भजो मनुष चरणा भोर पंखी दास
भजो घूंघर वाटी लोक नाथ चार भुजीनाथ
भजो घूंघर वाटी आरती उतार,
भजो नरोत्तम रामचन्द्र गोविन्ददास
मोपर कृपा करो प्रेम भक्ति दास
हरि आनन्द बोल हरि भज गोविन्दा बोल
राधा गोविन्द गोपीनाथ मदन मोहन,
राधेश्याम सुन्दर वृन्दावनचन्द,
भजो राधा रमण रासबिहारी श्री गोविन्दा
भजो राधेश्याम सुन्दर श्री गोवर्धन,
भजो मधुर मधुर बंशी बाजे श्री गोविन्दा

ॐॐॐ

भजन तुलसी महारानी

तुलसी महारानी गंगे महारानी बोलो नमोःनमोः
नमो ये नमो ये मैया नमो महारानी बोलो नमोःनमोतुलसी ।टेर।
याको दर्श परस अविनाशी, परस अविनाशी
हरे हरे याही ने वेद पुरान बखानी बोलो ।। नमोःनमोतुलसी
जाकी लीला और मंजरी कोमल, अरी मैया मंजरी कोमल
हरे हरे राधा गोविन्द चरण कमल लिपटामी नमोःनमोः।
धन्य तुलसी पूरण तप कीजै, एरी मैया पूरण तप कीजै
सालग राम महा पटरानी बोलो नमो, नमो तुलसी........
धूप और दीप नव वैद्य आरती, ओ मैया नव वैद्य आरती।
हरे-हरे ढूढत फिरे, वरसा बरसानी बोलो नमोःनमो तुलसी
छप्पन भोग छत्तीसी व्यंजन, अरी मैया छत्तीसी व्यंजन
हरे-हरे बिन तुलसी गोविन्द एक न मानी बोलो नमोःनमोतुलसी
शिव शनकादिक और ब्रह्मादिक, एरो मैया और ब्रह्मादिक
हरे-हरे गूढत फिरत महा मुनि ज्ञानी बोलो नमोःनमोतुलसी
प्रेम भक्ति मैया हरि गस कीजे, राधा गोविन्द बस कीजै
हरि बस कीजै, राधा गोपाल बस कीजै, श्यामसुन्दर बस कीजै
हरे सांवरी सूरत हिया में बसानी बोलो नमो : नमोःतुलसी

हरे-हरे माधुरी मूरत हिया में बसानी बोलो नमोः-नमोः
चन्द्र सखी मैया तेरी यश गावै, राधा गोविन्द गुण गावै
राधा गोपाल गुण गावै; श्याम सुन्दर गुण गावै
मन मोहन गुण गावै, मैया तेरी यश गावै
हरे भक्ति ज्ञान दिज्यो ये महारानी बोलो नमोःनमोतुलसी

भजन ॐ सालगरामजी

सालगराम जी सुनो विनती मोरी,
यो वरदान दयाकर पाऊं, कृपाकर पाऊं ।।
प्रातः समय उठकर भजन करके,
प्रेम सहित स्नान कराऊं..
केशर चन्दन और तुलसी दल,
भांति भांति का पुण्य चढांऊ... ।।1 ।। सालगराम जी
रतन सिंहासन प्रभुजी आप बिराजो,
झालर घण्टा मृदंग बजाऊं (मैं शंख)
एक बूंद चरणामृत लेकर,
कुटुम्ब सहित बैकुण्ड में आऊं... ।।2 ।। सालगरामजी
भक्तमाल मोहि दीज्यो मुरारी,
भोग लगा प्रसाद जो पावूं। भक्तमाल...

कोटीन पाप किया दुनिया में
दे परिक्रमा मैं शीश नवाऊं,
हाथ जोड़ सब माफ कराऊं..... ॥3 ॥ सालगरामजी
भवसागर की त्रास मेटज्यो,
गोपीनाथजी का दर्शन पाऊं।
तुलसीदास आशा रघुवर की।
सब सन्तन को मैं दास कहाऊं।
सब सन्तन को शीश नवाऊं... ॥4 ॥ सालगरामजी

भजन

मैं तो दर्शन करवा आयो गोविन्द दर्शन दे दीज्यो।
म्हांकी अर्जी दयालु श्याम बेगा सुण लीज्यो ॥
थांका शीश मुकुट गोविन्द धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका काना रा कुण्डल श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका हिवडारी माला श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हाने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका हाथारा गजरा श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हाने दर्शन दे दीज्यो ॥

थांका मुखड़ा री बंशी श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका अंग-पीताम्बर श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पीछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका पगल्यांरी पायल श्याम धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥
थांका बाया अंगा में राधे धारण कर लीज्यो।
धारण करिया पाछे तो म्हांने दर्शन दे दीज्यो ॥

भजन

गोविन्द तुम्हारे द्वारे पर
एक दरश भिखारी आया है ॥
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को
दो नैन कटोरे लाया है ॥
नहीं दुनिया में कोई मेरा है
आफत ने मुझको घेरा है ॥

प्रभु एक सहारा तेरा है
जग ने मुझको ठुकराया है ।।
धन दौलत की कुछ चाह नहीं
घर बार छूटे परवाह नहीं ।।
मेरी इच्छा है प्रभु दर्शन की
दुनियां से चित्त घबराया है ।।
मेरी बीच भंवर में नैया है
प्रभु तू ही एक खिवैया है ।।
लाखों को ज्ञान सिखाया तुमने
भव सिन्धु से पार लगाया है ।।
आपस में प्रीति वो प्रेम नहीं
तुम बिन प्रभु मुझको चैन नहीं ।।
अब तो प्रभु आकर दर्शन दो
यह दास बहुत अकुलाया है ।।
ॐॐॐ

भजन

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे चरणों में।
है जीत तुम्हारे चरणों में,
और हार तुम्हारे चरणों में ।।
मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
जैसे जल में कमल का फूल रहे।
मेरे गुण दोष समर्पित हो,
गोविन्द तुम्हारे हाथों में, गोपाल तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले,
तो नाथ इन चरणों का पुजारी बनूं,
इस पूजक की इक-इक रग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में
जब जब संसार का कैदी बनूं।
निष्काम भाव से कर्म करूं ।।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं,
निरंकार तुम्हारे हाथों में, सरकार तुम्हारे हाथों में।

हम में तुम बस भेद यही,
हम नर है तुम नारायण हो।
हम हैं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में ।।

भजन

मिलता है सच्चा सुख केवल गोविन्द तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
चाहे बैरी कुल संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
चाहे संकट ने मुझको घेरा हो,
चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित ना डग-मग मेरा हो ।। रहे ध्यान...............
जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और श्याम रहे।
चाहे क्रम बस आठों याम रहो ।। रहे ध्यान...........
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो,
चाहे कांटो पर मुझे चलना हो,
चाहे छोड़ के देश निकलना हो ।। रहे ध्यान.............